श्री आदिनाथ विधान

माण्डला

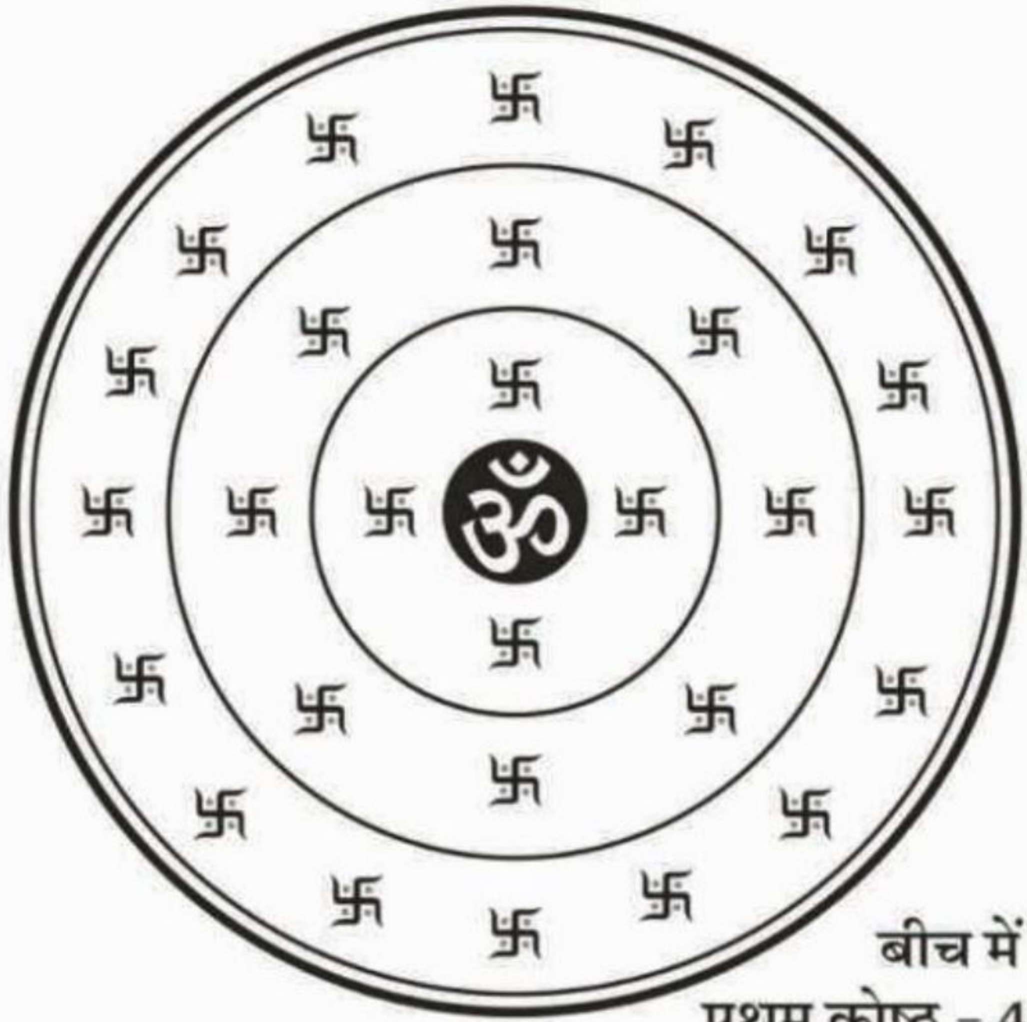

बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 4 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 16 अर्घ्य
कुल – 28 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

श्री आदिनाथ स्तवन

(बसंत तिलका छंद)

नाभेय राज कुल मण्डन आदिनाथः।
जातः अयोध्या पुरे मरुदेवि मातुः।।
सिद्धि प्रियाः सकल भव्य हितंकरेभ्यः।
दद्यात वृषं श्री वृषभ जिनराज सम्यक्।।1।।
कैवल्य बोध रवि दीधितिभिः समन्तात्।
दुष्कर्म पंकिल भुवं किल शोषयन यः।।
भव्यस्य चित्त जलज प्रति बोधकारी।
तं जिनेन्द्र सुर नुतं सततं स्तवीमि।।2।।
अष्टापदे विशद बर्फ युते मनोज्ञे।
योगे निरुध्य खलु कर्म वनं ह्यधाक्षीत्।।
लेभे सुमुक्ति ललना - मुपमाव्यतीताम्।
वन्दे त्वनन्त सुख धाम जिनेश तुभ्यं।।3।।
यद् वद् मया भव भवे जिन दुःख-माप्तं।
त्रैलोक्य वित् त्वमपि वेत्सि तदेवसर्वं।।
सर्वेश सम्प्रति भवान् भक्तां यदेव।
कर्तव्य - मस्ति कुरुतां मम तत्प्रमाणं।।4।।
ये त्वां नमंति हृदये दधते स्तवन्ति।
त्वच्छासनैकवचनं च वहंति मूर्ध्ना।।
तेषां सुरा अपि नतिं स्तवनं सुवाच।
कुर्वन्ति नित्यमिह का मनुजस्य वार्ता।।5।।
अकृतानि कृतानीह जिन बिम्बानि सर्वतः।
स्वात्म सौख्य प्रदानि स्यु कुर्युश्च मम मंगलम्।।

श्री आदिनाथ पूजा विधान

स्थापना

आदिनाथ भगवान हैं, शिव पद के दातार।
आह्वानन् करते हृदय, पाने मुक्ती द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई छन्द)

प्रासुक यह नीर चढ़ाएँ, जल धारा कर हर्षाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन गोशीर घिसाएँ, भवताप से मुक्ती पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत जिन चरण चढ़ाएँ, अक्षय पदवी हम पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह पुष्प चढ़ाएँ, हम कामरोग विनशाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु ताजे यहाँ चढ़ाएँ, अब क्षुधा से मुक्ति पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को दीप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, हम मोक्ष महाफल पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा कर अर्घ्य चढाएँ, अब पद अनर्घ्य पा जाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा - देते शांतीधार, भाव सहित हम भी यहाँ।
पाएँ भवदधि पार, यही भावना भा रहे।।

शान्तये शांतिधारा

सोरठा - पाने शिव सोपान, पुष्पांजलिं करते चरण।
करते हम गुणगान, अतः भाव से हम यहाँ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पंचकल्याणक के अर्घ्य

आषाढ़ सु द्वितीया गाई, प्रभु गर्भ में आए भाई।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण द्वितीयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि चैत नमें को स्वामी, जन्मे प्रभु अन्तर्यामी।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौमी वदि चैत को भाई, जिनवर ने दीक्षा पाई।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां दीक्षा कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशि फाल्गुन पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन वदि एकादश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि माघ सु चौदश आए, अष्टापद से शिव पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण चर्तुदश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – ऋषभ देव से देव का, कैसे हो गुणगान।
जयमाला गाते यहाँ, करने को जयगान।।

(पद्धरि छन्द)

जय भोग भूमि का अन्त पाय, जय ऋषभदेव अवतार आय।
जय पिता आपके नाभिराय, जय माता मरुदेवी कहाय।।1।।
जय अवधपुरी नगरी प्रधान, घर-घर में छाया सुयश गान।
सौधर्म इन्द्र तब हर्ष पाय, तव न्हवन मेरु पे जा कराय।।2।।
प्रभु के पद में करके प्रणाम, तव ऋषभनाथ शुभ दिया नाम।
शुभ धनुष पाँच सौ उच्च देह, जन-जन से जिनको रहा नेह।।3।।
लख पूर्व चौरासी उम्र जान, षट्कर्म की शिक्षा दिए मान।
नीलांजना की मृत्यु का योग, पाके छोड़े संसार भोग।।4।।
तब नग्न दिगम्बर भेष धार, निज में निज ध्याये निराकार।
प्रगटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान, प्रभु दिव्य देशना दिए जान।।5।।
फिर 'विशद' कर्म का कर विनाश, शिवपुर में जाके किए वास।
अष्टापद पाया मोक्ष थान, जो सिद्धक्षेत्र गाया महान।।6।।
महिमा का जिनकी नहीं पार, संयम धर पाए मोक्ष द्वार।
जो पूज्य हुए जग में महान, देते हैं जग को अभयदान।।7।।

दोहा – गुण गाते हैं भाव से, चरण झुकाते शीश।
अर्चा करते हम 'विशद', पाने को आशीष।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - गुण पाने गुणगान हम, करते मंगलकार।
शिवपद के राही बनें, पाएँ भवदधि पार।।

(इत्याशीर्वाद:)

प्रथम वलय:

दोहा - आराधन आराध कर, किए कर्म का अंत।
वृषभदेव वृष प्राप्त कर, हुए विशद अरहंत।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(चार आराधना के अर्घ्य)

(रेखता छन्द)

प्रभु जी पाए सम्यक् दर्श, जगाए मन में अतिशय हर्ष।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त करके प्रभु सम्यक् ज्ञान, जगाए अतिशय केवलज्ञान।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रभु जी होके चारित वान, किए जो निज आतम का ध्यान।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक् चारित आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी हो द्वादश तपवान, निर्जरा अनुपम किए प्रधान।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक् तप आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - सम्यक् दर्शन ज्ञान शुभ, चारित सुतप महान।
चउ आराधन कर मिले, शिव पद का सोपान।।5।।

ॐ ह्रीं चउ आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा - गुण अतिशय पाएँ प्रभू, दोष रहित भगवान।
भव्य जीव करते अतः, भाव सहित गुणगान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जिन गुणावली

(चौपाई)

जन्म के दश अतिशय प्रभु पाएँ, अतिशय पावन ये प्रगटाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।1।।

ॐ ह्रीं दश जन्मातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञान के अतिशय दश प्रगटाएँ, पावन केवलज्ञान जगाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।2।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान दशातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह देवों कृत कहलाएँ, अतिशय प्रभु जी ये भी पाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।3।।
ॐ ह्रीं चतुर्दश देवातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
होते प्रातिहार्य के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।4।।
ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
अनन्त चतुष्टय प्रभु जी पाएँ, कर्म घातियाँ आप नशाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।5।।
ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दोष अठारह रहित कहाए, प्रभु अतिशय महिमा दिखलाए।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।6।।
ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
कहे प्रभू दश धर्म के धारी, जिनकी महिमा अतिशय कारी।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।7।।
ॐ ह्रीं दशधर्म धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
द्वादश अनुप्रेक्षा जो ध्याएँ, अतिशय प्रभु वैराग्य जगाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।8।।
ॐ ह्रीं द्वादश अनुप्रेक्षा भावना युत श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।
प्रभु जी हैं अनुपम गुणधारी, जिनकी महिमा विस्मयकारी।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।9।।
ॐ ह्रीं अनुपम गुणधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा - गुण विशिष्ट पाएँ प्रभू, महिमामयी महान।
जिससे हो इस लोक में, जग जन का कल्याण।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

विशिष्ट गुणावली

(चाल छन्द)

प्रभु दोष रहित कहलाए, सर्वज्ञ आप्तता पाए।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व अपराध नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

है द्वेष रहित अविकारी, है जग से महिमा न्यारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं समस्तविध उपद्रव नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वीतरागता धारी, निज आतम ब्रह्म विहारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं समस्त विध अनर्थकारक रागभूत विनाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति ज्ञानाज्ञान निवारी, कैवल्य ज्ञान के धारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं समस्त विध दीनता हीनता नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञानाज्ञान के त्यागी, कहलाए आप विरागी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।5।।
ॐ ह्रीं समस्त विध अज्ञान नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्वय अवधि ज्ञान विनिवारी, जगती पति जिन शिवकारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।6।।
ॐ ह्रीं समस्त विध दुर्घटना नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मन पर्यय ज्ञान भी छोड़े, निज से निज नाता जोड़े।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।7।।
ॐ ह्रीं समस्त विध मनोरोग-विकार-विभ्रम नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो हैं तत्वों के ज्ञाता, इस जग के भाग्य विधाता।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।8।।
ॐ ह्रीं सप्त तत्व परमोपदेशक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जो पुण्य पाप परिहारी, जग-जन के रक्षाकारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।9।।
ॐ ह्रीं समस्त विध पराभव नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं जीव कई संसारी, इक दूजे के उपकारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।10।।
ॐ ह्रीं पंचपरावर्तन संसार भ्रमण नाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुक्त जीव हो जाते, वे सिद्ध बुद्ध कहलाते।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।11।।

ॐ ह्रीं आत्म सिद्धि निरोधक कारण विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस थावर जीव कहाए, जग में सब भ्रमते पाए।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।12।।

ॐ ह्रीं संयोग वियोग दुख विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भव्य जीव कहलाएँ, वे रत्नत्रय निधि पाएँ।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।13।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते अभव्य जो प्राणी, बहिरातम हो अज्ञानी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।14।।

ॐ ह्रीं निधत्ति निकाचित कर्म विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर आतम हो ज्ञानी, जो वीतराग विज्ञानी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।15।।

ॐ ह्रीं कुश्रुत श्रद्धा विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सकल निकल द्वय गाए, परमातम विशद कहाए।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।16।।

ॐ ह्रीं कपोल कल्पित सिद्धान्त श्रद्धा विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह गुण विशेष जिन पावें, अरहंत अतः कहलावें।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।17।।

ॐ ह्रीं विशिष्ट गुण धारक कष्ट निवारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा - धनुष पाँच सौ उच्चतम, तन है स्वर्ण समान।
लख चौरासी पूर्व वय, ऋषभनाथ भगवान।।

(शम्भू छन्द)

पंचकल्याणक पाने वाले, तीर्थंकर हैं जगत प्रसिद्ध।
कर्म नाशकर अपने सारे, हो जाते हैं वे जिन सिद्ध।।
गर्भ कल्याणक में आने के, छह महीने पहले शुभकार।
देव रत्न वृष्टी करते हैं, जन्म नगर में मंगलकार।।1।।
अष्ट देवियाँ गर्भ का शोधन करती आके भाव विभोर।
उत्सव होता है नगरी में, मंगलमय होता चारों ओर।।
सोलह स्वप्न देखती माता, जिनकी महिमा अपरम्पार।
जन्म समय में इन्द्र चरण में, बोला करते जय जयकार।।2।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराने, ऐरावत ले आता इन्द्र।
एक हजार आठ कलशों से, न्हवन करायें सौ सौ इन्द्र।।

पद युवराज प्राप्त करके जिन, पाते हैं नर भव के भोग।
हो विरक्त दीक्षा पाते हैं, पा करके अनिष्ट संयोग।।3।।
केश लुंच कर महाव्रती हो, करते हैं निज आतम ध्यान।
कर्म निर्जरा करते ज्ञानी, असंख्यात गुणी जिन भगवान।।
कर्म घातियाँ के नाशी जिन, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
समवशरण की रचना करते, स्वर्ग से आके इन्द्र महान।।
दिव्य देशना खिरती प्रभु की, भव्य जीव करते रसपान।
कोई दर्शन ज्ञान जगाकर, चारित पा करते कल्याण।।
अन्त समय में कर्म नाशकर, करते हैं प्रभु मोक्ष प्रयाण।
मोक्ष मार्ग दर्शायक जग में, आदिनाथ जी हुए महान।।5।।

दोहा - राही बनते मोक्ष के, तीर्थंकर भगवान।
जिनसे दर्शन ज्ञान पा, करते निज कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा -श्रद्धा से सम्यक्त्व हो, होवे सम्यक् ज्ञान।
सम्यक् चारित हो विशद, जो है शिव सोपान।।

इत्याशीर्वादः

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा - परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्ति कर, भवदधि पाऊँ पार।।
आज यहाँ हम भाव से, करते है गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।।1।।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।2।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।।3।।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।4।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।।5।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।6।।
चिन्ह बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।।7।।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।8।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।।9।।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।10।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।।11।।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।12।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अत: कहलाई।।13।।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।14।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।।15।।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।16।।
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।।17।।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।18।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।।19।।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।20।।
छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।।21।।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।22।।

छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।।23।।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।24।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।।25।।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया।।26।।
पंचाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।।27।।
प्रभुजी केवलज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।28।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।।29।।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए।।30।।
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।।31।।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।32।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।।33।।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।34।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।।35।।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।36।।
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।।37।।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।।38।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।।39।।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावें भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान।।

श्री आदिनाथ जी की आरती

आज करें हम आदि प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
रोग-शोक-संताप निवारक-2, पावन मंगलकारी।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।टेक।।
भक्तों को हे प्रभू आपने, अतिशय कई दिखाए-2।
दीन-दुखी जो दर पे आए-2, उनके कष्ट मिटाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।1।।
दूर दूर से आशा लेकर, भक्त यहाँ पर आते-2।
भक्त आपकी आरती करके-2, मन वांछित फल पाते।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।2।।
कृपा आपकी पाने को हम, दर पे चल के आए-2।
अर्चा करने 'विशद' भाव से-2, दीप जलाकर लाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।3।।
हमने सुना है सद्भक्तों के, तुम हो कष्ट निवारी-2।
हम भी द्वार आपके आए-2, आज हमारी बारी।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।4।।
दीनानाथ अनाथों के हो, सब पर कृपा दिखाते-2।
अतः भक्त तव चरणों आके-2, सादर शीश झुकाते।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।5।।